# अधिक चारे के लिए संकर हाथी घास

डा. वी. के. सूद, डा. नवीन कुमार व डा. एच. के. चौधरी

**अखिल भारतीय समन्वयित चारा अनुसंधान परियोजना**
**चौ. स. क. कृषि वि-वविद्यालय, पालमपुर**

संकर हाथी घास को चरागाहों, उद्यानों, घासनियों, खेतों की मेंढ़ों और ढलानदार जगहों में लगाया जा सकता है। चारे के अलावा भूमि कटाव को रोकने के लिए भी यह घास बहुत उपयोगी है। यह सीधी उपर उगने वाली बहुवर्शीय घास है। इसकी ऊँचाई लगभग 1-2 मीटर तक हो जाती है। इसके एक पौधे से लगभग 30-40 तने निकलते है जो 2 सैं0मी0 मोटे होते हैं। एक तने में 15-20 पत्तियाँ होती हैं। पत्तियों की लम्बाई 60 से 100 सैंटीमीटर तथा चौड़ाई 3 से 7 सैं0मी0 होती है। इस घास में बीज नहीं बनता, इसलिए जड़ युक्त पौध या कलम द्वारा लगाया जाता है । इसकी वृद्धि दिसम्बर से फरवरी महीनों को छोड़कर पूरे वर्श होती है। यह देसी घासों की तुलना में ज्यादा समय तक हरी रहती है तथा तीन से चार गुणा अधिक चारा प्रदान करती है। बर्फ या ज्यादा ठण्ड़ पड़ने पर यह सूख जाती है परन्तु बसन्त ऋतु शुरू होते ही यह फिर बढ़ना शुरू कर देती है। इसका चारा बड़ा ही पौश्टिक होता है तथा इसमें 8 से 10 प्रतिशत प्रोटीन होती है।

**उन्नत किस्में**

संकर हाथि घास की उन्नत किस्में एन0 वी0 -37 व आई0 जी0 एफ0 आर0 आई0 -5 है। यह किस्में शीघ्र बढ़ने वाली हैं। इन किस्मों में एन0 वी0 -37 की पैदावार 48-56 कि0 ग्रा0 प्रति बीघा हरा चारा है व आई0 जी0 एफ0 आर0 आई0 -5 की पैदावार 40-48 कि0 ग्रा0 प्रति बीघा हरा चारा है। एन0 वी0 -37 के पत्ते व टहनियाँ बहुत ही मुलायम होते है तथा इसके तने मोटे और सख्त नहीं बनते आई0 जी0 एफ0 आर0 आई0 -5 किस्म को छोटे-छोटे अन्तराल में काट लेना चाहिए क्यों कि इसके पते व टहनियाँ बढ़ोतरी के साथ-साथ सख्त हो जाते है।

**रोपाई**

संकर हाथि घास में बीज नहीं बनता इसलिए इसकी जड़ युक्त पौध या तने की कलमों द्वारा ही रोपाई की जाती है। बारानी क्षेत्रों में वर्षा के शुरू होने पर जून के अन्त से अगस्त अन्त तक रोपाई की जा सकती है। सिंचित क्षेत्रों में जाड़े के दिनों को छोड़कर इसे

कभी भी लगाया जा सकता है। जड़ युक्त पौध या कलमों की पंक्ति से पंक्ति तथा पौधे से पौधे की दूरी 40 सैं0मी0 रखनी चाहिए । यदि चरागाहों तथा घासनियों में लगाना हो तो उगी हुई देसी घास को फावडे से खुरच कर छोटे- छोटे गड्ढे बनाकर इसकी जड़ों को 40ग40 सैं0 मी0 की दूरी पर लगाने के लिए एक बीघा में 5000 जड़ों की आव-यकता पड़ती है। इस घास से साल भर हरा चारा प्राप्त करने के लिए निम्नलिखित तरीके से लगाया जा सकता है।

खेत को अच्छी तरह तैयार करने के बाद इसकी जड़ों को 40x40 सैं0 मी0 की दूरी पर वर्षा के शुरू होने पर लगाएं। सितम्बर के अन्त या अक्तूबर के :ुरू में कटाई के बाद खेत में बरसीम और सरसों की बीजाई कर दें। इस तरह से गर्मी और बरसात में संकर हाथी घास से और जाड़े में जब संकर हाथी घास की वृद्धि नहीं होती तो बरसीम+सरसों से हरा चारा मिलता रहता।

**खाद**

संकर हाथी घास को जड़ों के लगाने के समय 13 कि0ग्रा0 यूरिया और 30 कि0 ग्रा0 सुपरफास्फेट खाद प्रति बीघा की दर से डाले। इसके बाद हर कटाई के बाद 3.5 कि0 ग्रा0 बीघा यूरिया देनी चाहिए, इससे अच्छी वृद्धि होती है।

**कटाई**

पहली कटाई जड़ युक्त पौध या कलम लगाने के लगभग ढ़ाई महीने बाद तैयार होती है। पूर्ण रूप से स्थापित घास को असिंचित क्षेत्रों में वर्श भर में तीन बार जून, अगस्त और अक्तूबर में तथा सिंचित क्षेत्रों में चार बार मई, जुलाई, अगस्त एवं अक्तूबर में काटा जा सकता है। असिंचित क्षेत्रों से वर्श भर मे लगभग 24-32 क्विंटल एवं सिंचित क्षेत्रों से वर्श भर में लगभग 48-56 हरा चारा प्रति बीघा प्राप्त होता है।

**अच्छी उपज लेने के लिए निम्न बातों का वि-ोश ध्यान रखें:**

संकर हाथी घास की ऊँचाई जब लगभग 1.25 मीटर हो जाए तभी इसको काट लेना चाहिए क्योंकि इसके बाद घास के पौश्टिक तत्वों में कमी होने लगती है।

घास को जमीन की सतह से लगभग 8 या 10 सैं0मी0 की ऊँचाई पर काटना चाहिए । ज्यादा ऊँचाई पर काटने से नीचे से नई शाखाएं न निकलकर उपर से निकलने लगती है। इससे बाद मे कटाई में कठिनाई एवं पैदावार में भी कमी होने लगती है।

तीन चार साल के बाद संकर हाथी घास में कई पुराने तने सूख जाते हैं। इससे पैदावार में कमी होने लगती है। इसलिए चार साल के बाद पुरानी जड़ों को निकालकर नई जड़ें या कलमें फिर से लगा देनी चाहिए।